E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

''मध्यप्रदेश की गोंड जनजाति चित्रकला का वैश्विक प्रभाव एवं प्रमुख गोंड कलाकारों का योगदान''

सरिता उलाड़ी
शोधार्थी,
चित्रकला,
जीवाजी विश्वविद्यालय,
ग्वालियर (म.प्र.)

डॉ. जया जैन
मार्गदर्शिका,
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
चित्रकला विभाग,
शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर, स्वशासीय महाविद्यालय,
ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Received date
05/05/2026
Publishing Date
10/05/2026
DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.21432739

IMPACT FACTOR 5.924

सारांश –
मध्यप्रदेश की गोंड चित्रकला जो मुख्य रूप से अपनी जीवंत रंगों बिंदुओं और रेखाओं के माध्यम से प्रकृति और पौराणिक कथाओं को दर्शाती है। गोंड प्रधान चित्रकला के मुख्य कलाकार स्वर्गीय श्री जनगढ़ सिंह श्याम जैसे कलाकारों के योगदान से यह पारंपरिक भित्ति चित्रकला जनजाति झोपड़ियों से निकलकर जापान, पेरिस, टोक्यो जैसे अंतर्राष्ट्रीय दीर्घाओं पर वैश्विक स्तर पर विश्व भर में अपनी पहचान बना चुकी है।

परिचय–
गोंड जनजाति मध्यवर्ती भारत में निवास करने वाली एक ऐसी प्रमुख जनजाति है। जो भारत के सर्वाधिक विस्तृत भूभाग में निवास करती है। मध्यप्रदेश की गोंड जनजाति परंपरागत समुदायों में सामाजिक आर्थिक धार्मिक या रक्त संबंधों से जुड़े परिवारों या समुदायों का समूह होता है। गोंड शब्द द्रविड़ शब्द ''कोंड'' से लिया गया है, जिसका अर्थ है हरा पहाड़ होता है। गोंडों को ßकोय या कोयतुरÞ के रूप में पहचाना जाता है।

गोंड चित्रकला गोंडवाना क्षेत्र की कला है, जिसमें मध्यप्रदेश शामिल है। भारत की एक आदिवासी जनजाति गोंड जनजाति की समृद्ध संस्कृति और उन में जन्मजात कलात्मक प्रतिभाएं हैं। प्राचीन गोंड कला में कलाकार घरों की दीवारों पर जीवन परिदृश्य, पौराणिक कथाओं एवं जनजीवन, प्रकृति चित्रण आदि का चित्रण करते थे। माना जाता है कि इस कला शैली प्राचीन काल से जुड़ी हुई है। ''जब गोंड लोग अपने घरों को सजाने के लिए प्राकृतिक रंगों और सामग्रियों का उपयोग करते थे यह परंपरा मुख्य रूप से मौखिक थी, जिसमें विषय–वस्तु और कहानियाँ पीढ़ियों से चली आ रही थी। हाल ही के वर्षों में गोंड चित्रकला ने अपनी विशिष्ट शैली और सांस्कृतिक महत्व के लिए वैश्विक स्तर पर पहचान हासिल की है।''[1]

''ऐतिहासिक रूप से गोंड कला मुख्य रूप से घरों की दीवारों और जमीन पर पौधों के रस और चारकोल जैसी प्रकृति की सामग्रियों का उपयोग करके बनाई जाती थी, लेकिन अब आधुनिकीकरण के आगमन के साथ गोंड कलाकारों ने कैनवास कागज और एक्रिलिक रंग जैसे नए माध्यमों को अपनाया है, जिससे उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति का दायरा विस्तृत हुआ है।''[2]

गोंड चित्रकला में उपयोग की जाने वाली सामग्रियों मैं समय के साथ काफी बदलाव आया है। परंपरागत रूप से कलाकार कई पौधों फल और खनिजों से प्राप्त प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके अपने विशिष्ट समृद्ध और जीवंत रंगों का संग्रह तैयार करते थे। इन प्राकृतिक रंगों से रंगों की इतनी विस्तृत श्रृंखला प्राप्त होती थी, जिससे गोंड लोग अपने परिवेश से संबंध बनाए रख पाते थे। नील हल्दी और विभिन्न प्रकार के फूलों के रस एवं वृक्षों की राल अपनी विशिष्ट विशेषताओं और सामग्री में से थे।

प्रकृति के रंगों के अलावा गोंड कलाकार परंपरागत रूप से अपनी कलाकृतियाँ बनाने के लिए लकड़ी की कोयला और मिटटी का उपयोग करते थे, इन सामग्रियों को तैयार करना अक्सर श्रम साध्य होता था और इसके लिए परिवेश और उपलब्ध संसाधनों का गहन साथ ही गोंड समुदाय की प्रकृति के प्रति समर्पण को भी दर्शाती थी, जो उनके जीवन यापन और कल्पना शीलता के लिए अध्ययन आवश्यक था परंपरागत रूप से उपयोग की जाने वाली सामग्रियाँ कलाकृति का प्रमाणिकता को बढ़ाती थी, साथ ही गोंड समुदाय की प्रकृति के प्रति समर्पण को भी दर्शाती थी, जो उनके जीवन यापन

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

और कल्पना शीलता के लिए आवश्यक थी इन परंपरागत विधियों के विपरीत आधुनिक गोंड कलाकार एक्रेलिक रंगों और कैनवास का व्यापक रूप से उपयोग करते थे, इससे कला का यह रूप लोगों के लिए अधिक सुलभ हो गया है और कलाकारों को नई तकनीक और शैलियों पर प्रयोग करने का अवसर मिला है। व्यावसायिक रूप से उपलब्ध रंग उन्हें अधिक गहरे रंग और बारीक विवरण प्रदान करते हैं, जिससे गोंड कला की हृदय भाषा में और अधिक विविधता आती है। हालाकि ''आधुनिक गोंड कलाकारों में से कई आज भी पारंपरिक सामग्रियों और रूपांकन को उपयोग करके अपनी जड़ों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हैं। पुराने और नए कार्य निर्मित दृष्टिकोण दर्शाता है कि गोंड कला कितनी जीवंत है,''[3] क्योंकि यह अपनी परंपरा को कोई बिना विकसित हो सकती है। तकनीक के विकास ने मिश्रित माध्यम से कलाकृतियाँ बनाने को भी जन्म दिया, जिसमें गोंड परंपरा के माध्यम से संभव कला रूप की सीमाओं को और भी आगे बढ़ाया गया है।

गोंड चित्रकला का वैश्विक प्रभाव

आधुनिक कला में गोंड कला का स्थान – आधुनिक काल में गोंड कला ने एक खास जगह बना चुकी है और कला प्रेमियों द्वारा इसकी खूब सराहना की जा रही है। गोंड चित्रों के रंग और पैटर्न ने दुनिया भर की गैलरी संग्रहालयों और प्रदर्शनियों को आकर्षित किया है। कला मेले के शीर्ष स्तर से लेकर स्थानीय प्रदर्शनियों तक गोंड कला को कलात्मक और सांस्कृतिक महत्व से लगातार जोड़ा जा रहा है यह कला रूप जनजाति की पहुंच से परे बेहद आकर्षक और शानदार है। गोंड शैली के रूपांकन से सजी घरेलू सजावट की वस्तुएं शहरी और अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही दर्शकों के बीच लोकप्रिय हो रही है। ''यह लोगों को भारत की अनोखी चित्रकला के रूप में भारत का एक छोटा सा अंश अपने दैनिक जीवन में साथ रखने का अवसर प्रदान करती है। इसलिए आधुनिक दुनिया में सांस्कृतिक विरासत को महत्व देना महत्वपूर्ण है।''[4]

दीवार कला भित्ति चित्र – कौन जनजाति अक्सर पहले दीवारों पर भित्ति चित्र बनाया करते थे, जो अक्सर पुराने पहले के घरों में दिखाई देते हैं, जो संस्कृत सुंदरता और जीवंतता को जोड़ते हैं।

वस्त्र एवं घरेलू सजावट में गोंड चित्र – गोंड चित्रकला विभिन्न घरेलू सजावट की वस्तुओं जैसे कुशन, कालीन बेडशीट, परदे, साड़ियां, सूट, दुपट्टा, रुमाल, शर्ट, टेबल कवर और लैंप पर दिखाई देती हैं, जो आधुनिक सजा में एक अनूठा और रंगीन सौंदर्य जोड़ती है।

सार्वजनिक स्थान–गोंड चित्रकला का उपयोग होटलों रोड की दीवारों और कार्यालय जैसे सार्वजनिक स्थानों में तेजी से किया जा रहा है, जो संस्कृतिक और सौंदर्य पूर्ण आकर्षण प्रदान करता है।

डिजिटल उत्पाद–''डिजिटल कला के उदय के साथ गोंडों से प्रेरित डिजाइनों का उपयोग वॉलपेपर, स्क्रीन रोवर और सोशल मीडिया ग्राफिक्स जैसे डिजिटल उत्पादों में भी किया जाता है।''[5]

सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म–सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफार्म के उदय ने गोंड कलाकारों को अपने काम को प्रदर्शित करने और वैश्विक दर्शकों से जुड़ने का एक शक्तिशाली माध्यम प्रदान किया है।

कार्यशालाएं– कई कलाकार हैं, जो सांस्कृतिक संगठन कार्यशालाएं आयोजित करते हैं, जहां कला प्रेमियों को गोंड चित्रकला की तकनीके सीखने का अवसर मिलता है। यह कार्यशालायें व्यावहारिक अनुभव और कला के प्रति गहन जानकारी प्रदान करती है।

वाणिज्यिक व्यवसायीकरण –गोंड कला ने घरेलू सजावट की वस्तुओं और स्टेशनरी सहित विभिन्न वाणिज्यिक उत्पादों में अपनी जगह बना ली है। इस व्यवसायीकरण ने कलाकारों को नए अवसर और आय के स्त्रोत प्रदान किए हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान – गोंड कला को अंतराष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण मान्यता प्राप्त हुई है। फ्रांस जर्मनी और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देशों में प्रदर्शनियाँ और सहयोग आयोजित किए गए हैं। इस पहचान इसकी लोकप्रियता और मूल्य को और भी बढ़ा दिया है।[6]

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

गोंड चित्रकला को जी आई टैग – मध्यप्रदेश की उत्कृष्ट गोंड चित्रकला को भौगोलिक संकेत जी आई टैग का दर्जा मिला है। यह मान्यता मध्यप्रदेश के डिंडोरी जिले में इस कला के संरक्षण गोंड जनजाति के असाधारण कौशल और अनूठी पहचान का प्रमाण है।

''इस मान्यता से जनजाति को अपनी पारंपरिक कला उपयोग आर्थिक विकास और पहचान के लिए करने का शानदार अवसर भी मिला है। यह कदम न केवल गोंड कला व्यापक दर्शकों तक पहुंचने का मंच प्रदान कर रहा है और गोंड जनजाति के कलाकारों के लिए रोजगार के अवसर भी मिल रहे हैं।'' [7]

गोंड चित्रकला के प्रमुख कलाकारों का योगदान–भारत की सबसे बड़ी जनजातियों में से एक गोंड जनजाति का इतिहास कई वर्ष पुराना है। मुख्य रूप से मध्य प्रदेश राज्य में रहने वाली गोंड जनजाति कई हिस्सों में पाई गई है। जैसे– छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा आदि भारत की जनजाति कला का सार समेटे हुए गोंड अपनी खूबसूरत चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध है, जो जीवंत रंगों और आकर्षक पैटर्न से परिपूर्ण है। लेकिन गोंड चित्रकला हमेशा से इतनी प्रसिद्धि नहीं थी। पिछले लगभग 40 वर्षों में कई गोंड कलाकारों ने इसी मुख्य धारा में आया है यहां हम प्रमुख कलाकारों पर चर्चा कर रहे हैं, जिन्होंने इस विशिष्ट कलात्मक विरासत को जीवंत रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

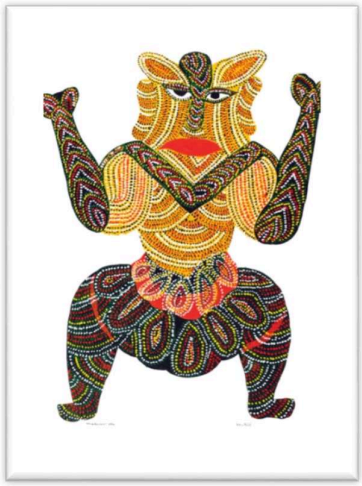

मुख्य कलाकार स्वर्गीय जनगढ़ सिंह श्याम – गोंड प्रधान चित्रकला को वैश्विक स्तर तक पहुंचाने का श्रेय परधान जनजाति के कलाकार स्वर्गीय जनगढ़ सिंह श्याम को जाता है, उन्होंने अपनी इस कला को मेहनत लगन से आगे बढ़ाया है। चित्रकार जगदीश स्वामीनाथन ने जनगढ़ सिंह श्याम की कला प्रतिभा को पहचान और उन्होंने जनगढ़ कलम नाम से एक नई कला शैली को ढूंढ निकाला यह चित्रकला मध्य प्रदेश के डिंडौरी जिले के पाटनगढ़ में फल –फूल रही थी। पाटनगढ़ गांव में घूमते समय स्वामीनाथन ने दीवारों पर बनी चित्रों को देखा, जिन्हें देख कर वे बहुत अधिक प्रभावित हुए, यह चित्र गांव के कुछ लोगों और महिलाओं द्वारा बनाई गई थी और कुछ चित्र जनगढ़ सिंह श्याम के द्वारा बनाया गया था, उन्होंने अपने अंदाज में जनजाति देवी देवता पशु पक्षी और पेड़ पौधों का चित्रण किया और जे. स्वामी नाथन को एक नई कला से अवगत कराया, उनकी कला से भी प्रभावित हुए, उन्होंने उन्हें भोपाल के भारत भवन में आमंत्रित किया और कलाकृतियों को आगे बढ़ाने हेतु प्रेरित किया अपनी कला प्रतिभा को आगे बढ़ाने हेतु उन्होंने कई माध्यमों में काम किया, पहले जो चित्र दीवारों पर बनाए अब वही चित्र दीवारों से उठकर कागज और कैनवास पर आ गए, उन्होंने अपने मस्तिष्क पर बने चित्रों को दीवारों कागज और कैनवास पर एक नई स्थान बनाई भारत भवन भोपाल, विधानसभा भोपाल की दीवारों पर अपनी सृजनात्मक प्रतिभा द्वारा सजीव बना दिया।

सन 1989 में पेरिस में आयोजित यह प्रदर्शनी में, उनके चित्रों को अधिक सराहना मिली जो धारा के जादूगर मैजिशियन ऑफ़ द अर्थ नाम से आयोजित हुई। गोंड प्रधान चित्रकला के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली है। पहली प्रदर्शनी थी, जिसमें विश्व की कला विशेषज्ञों को भी आकर्षित किया। सन 1989 में टोक्यो के मिथिला म्यूजियम में आयोजित कला प्रदर्शनियाँ में उनके कार्य को अधिक पसंद किया गया। जनगढ़ सिंह श्याम के चित्रों की प्रदर्शनियाँ देश विदेश के अनेक संग्रहालय एवं कला विधि गांव में संपन्न हुई और गोंड प्रधान चित्रकला का नाम भारतीय कला के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो गया। वे पहले कलाकार थे, जिन्होंने कागज और कैनवास पर एक्रेलिक रंगों का प्रयोग करके चित्रकार की शुरुआत की और "जनगढ़ कलम" के नाम से मशहूर इस शैली को स्थापित किया 2001 में 39 वर्ष की आयु में उनका आकस्मिक निधन हो गया। लेकिन इससे पहले उन्होंने भारत और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बनाई आज दिवंगत कलाकार के करीबी और दूर के रिश्तेदार स्वयं प्रसिद्ध गोंड कलाकार हैं और मध्य प्रदेश के भोपाल स्थित उनके घर रचनात्मक गतिविधियों से गुलजार है। जनगढ़ सिंह श्याम के परिवार में उनकी पत्नी ननकुसिया बाई और दो बच्चे मयंक श्याम और जापानी श्याम है, जो इस कला को आगे बढ़ा रहे हैं।

ननकुसिया बाई श्याम –जनगढ़ की पत्नी ननकुसिया बाई जनगढ़ कलम की एक समर्पित कलाकार है, इन्होंने अपने पति जनगढ़ से सीखी और उनकी मृत्यु के बाद भी इस पूरी जीवंतता के साथ जारी रखा वह अपनी कलाकृतियों में प्रकृति के

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

साथ–साथ उन अनेक जानवरों को भी चित्रित करती है, जिन्हें उन्होंने मध्यप्रदेश के सनपुरी में अपने बचपन के दौरान देखा था।

मयंक श्याम का जन्म 1987 में जनगढ़ और ननकुसिया के घर हुआ था। जनगढ़ स्कूल के सबसे युवा सदस्यों में से एक है, उन्होंने कई कार्यशालाओं और समूह प्रदर्शनों में भाग लिया है और उनकी गोंड कला कृतियों को दुनिया के शीर्ष नीलामी घरों में से एक साउथ बीच न्यूयॉर्क द्वारा प्रदर्शित किया गया है। 2006 में उन्हें हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम भोपाल द्वारा राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। मयंक श्याम अक्षर अपनी कला और सफेद रंग में चित्र बनाना पसंद करते हैं, क्योंकि उनका मानना है, कि रंगों से ध्यान आकर्षित करना आसान है, लेकिन केवल काला और सफेद रंग में हैं, लेकिन केवल काले रंग से ऐसा करना चुनौती पूर्ण है और यही वह करने का प्रयास करते हैं।

जापानी श्याम अपने पिता की जापान की पहली यात्रा के नाम पर नामित जहाँ उनका जन्म भी हुआ था। जापानी श्याम जनगढ़ की इकलौती और पुत्री है। जापानी ने बहुत कम उम्र में ही चित्रकारी शुरू कर दी थी और 11 वर्ष की आयु में कमला देवी पुरस्कार जीता था। एक प्रख्यात गोंड कलाकार उनकी पहली एकल प्रदर्शनी 2019 में नई दिल्ली के गैलरी में आयोजित हुई थी। जापानी की कलाकृतियां अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित की जा चुकी है और अपने पिता की तरह वह भी अपनी कला में प्रकृति की कहानी बयां करती हैं, हालांकि उनकी कला विशिष्ट है।

सुभाष व्याम एक बहुत ही प्रसिद्ध गोंड कलाकार हैं मिट्टी और लकड़ी की मूर्तियों में प्रारंभिक अनुभव प्राप्त करने के बाद सुभाष ने गोंडकला में कदम रखा जलीय जीवन उनका पसंदीदा विषय है, लेकिन लोक कथाओं के विशाल भंडार वाली अपनी पत्नी दुर्गाबाई से प्रेरित होकर उन्होंने इन कहानियों के पात्रों और दृश्यों को भी अपनी कला में शामिल करना शुरू कर दिया है। सुभाष व्याम को 2002 में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा राज्य हस्तशिल्प पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

दुर्गाबाई व्याम –गोंड प्रधान जनजाति की महिला कलाकार जिन्होंने गोंड चित्रकला में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

प्रकृति और नारीत्व से जुड़े विषय उनकी कला में अक्सर रुचि जागते हैं और वह जनजाति समाज में एक महिला के रूप में अपने अनुभवों को अपनी कलाकृतियों में पिरोती हैं।

दुर्गाबाई व्याम कार्यशालाओं और प्रदर्शनियों की अपने व्यापक पोर्टफोलियो के माध्यम से गोंड कला को बढ़ावा देना जारी रखेगी, जो गोंड जनजाति की संस्कृति को जीवित रखने में योगदान दे रहे हैं।

भज्जू श्याम –गोंड कलाकार है जिनका जन्म मध्य प्रदेश के पाटनगढ़ गांव में हुआ। भोपाल में नौकरी की तलाश करते समय उनके चाचा जनगढ़ ने, उन्हें कला के क्षेत्र में आने के लिए प्रोत्साहित किया, उनके अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित पुस्तक जंगल बुक लंदन शहर में सांस्कृतिक अनुभवों पर एक कलाकार के विचारों का प्रतिबिंब है। एक प्रसिद्ध चित्रकार के रूप में उन्हें दुर्गाबाई व्याम के साथ नाइट लाइफ ऑफ ट्रीज पर अपने काम के लिए इतालवी बोलोगना रागाजी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। कला के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें 2018 में भारत के चौथे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पदमश्री से भी सम्मानित किया गया है।

वेंकट रमन सिंह श्याम –मध्यप्रदेश के मंडला जिले के सिजोरा गांव में प्रधान गोंड परिवार में जन्मे वेंकट रमन सिंह श्याम 16 वर्ष की आयु में अपने चाचा जनगढ़ के साथ भोपाल स्थित उनके स्टूडियो मैं प्रशिक्षण लेने के लिए शामिल हो गए। गोंड कलाकारों में सबसे समकालीन माने जाने वाले वेंकट ने मिश्रित माध्यम और एनीमेशन जैसी कला विधाओं को अपनाया है। ''मुंबई के कोलार स्थित ताज होटल पर 2008 में हुए आतंकवादी हमले को देखकर कलाकार ने इस घटना पर आधारित 16 चित्रों की एक श्रृंखला बनाई है, वे अपनी रचनाओं में पारंपरिक गोंड रूपांकनों को समकालीन पहचाने और सांस्कृतिक विरासत के साथ जोड़ते हैं, वे नेटवर्किंग और प्रचार के माध्यम से गोंड कला का समर्थन करते हैं, जिस कला को पहचान मिलती है और समुदाय के अन्य कलाकारों को भी सशक्त बनाया जा सकता है।''[8]

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

गोंड कला में एक अन्य महत्वपूर्ण हस्ती वेंकटरमन सिंह श्याम है, वे अपनी रचनाओं में पारंपरिक गोंड रूपांकनों को समकालीन पहचाने और सांस्कृतिक विरासत के साथ जोड़ते हैं। वे नेटवर्किंग और प्रचार के माध्यम से गोंड कला का समर्थन करते हैं, जिस कला को पहचान मिलती है और समुदाय के अन्य कलाकारों को भी सशक्त बनाया जा सकता है।

गोंड चित्रकला के प्रमुख कलाकार जो विश्व भर में गोंड कला को लोकप्रिय बनाने में योगदान दिया है। सबसे मुख्य कलाकार जनगढ़ सिंह श्याम उनकी कला में पारंपरिक विषयों को आधुनिक सौंदर्य शास्त्र के साथ मिलकर एक नई रचनात्मकता झलकती थी, ''जिसने उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई, उन्होंने उनका पूरा परिवार को प्रेरित किया और आधुनिक कला जगत में गोंड चित्रकला को ऊंचा स्थान दिलाया। इन कलाकारों ने अन्य कई कलाकारों के साथ मिलकर विश्व स्तर पर गोंड कला के पुनरुथान और प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आधुनिक सोच के साथ पारंपरिक तकनीकों को पुनर्जीवित करके उन्होंने गोंड चित्रकला को जीवंत और गतिशील बनाए रखा है, उनका योगदान कलाकारों और कला प्रेमियों को समान रूप से प्रेरित करता रहता है, जिससे इस समृद्ध विरासत को और भी अधिक सम्मान प्राप्त होता है।''[9]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. https://www.cottage9.com/blog/gond-painting-exploring-the-art-and-tradition/

2. गोंड कला को समझना https://share.google/RaCxXWg2bOimF9xTW

3. गोंड कला चित्रकला | इतिहास, तकनीकें और आधुनिक प्रभाव
https://share.google/OHapwnV6xPJdteACg

4. गोंड कला चित्रकला | इतिहास, तकनीकें और आधुनिक प्रभाव
https://share.google/OHapwnV6xPJdteACg

5. https://www.astaguru.com/blogs/gond-art---encyclopedic-guide-to-a-timeless-tribal-tradition-263

6. https://www.cottage9.com/blog/gond-painting-exploring-the-art-and-tradition/

7. https://share.google/9BNeuSQ6WHvuDfeMU

8.. Gond Paintings From Madhya Pradesh Gets GI Tag, Here's All You Need To Know About It https://share.google/sAgpMNjEfflqzxM5E

9. https://share.google/cmoOoaUd2kFwH3Dvv

10. गोंड कला चित्रकला | इतिहास, तकनीकें और आधुनिक प्रभाव
https://share.google/OHapwnV6xPJdteACg